ISSN 2230-7850 Impact Factor : 4.1625 (UIF) Volume - 6 | Issue - 5 | June - 2016
Indian Streams Research Journal

नारी समस्या की दास्तान है–'पचपन खम्भे लाल दिवारें'

प्रा. विठ्ठल केशवराव टेकाले
एस. एस. एम. कॉलेज, गंगाखेड, जि. परभणी. (महाराष्ट्र)

आधुनिक युग में नारी चेतना में परिवर्तन आया है; इसका श्रेय स्त्री रचनाकारों को ही जाता है। इन महिला रचनाकारों ने नारी के उस रूप को सामने लाया है, जो सदियों से घर में कहीं दबा पडा था। नारी की मानसिकता, संवेदना, घुटन और पीडा को महिला रचनाकारों ने जिस गहन अनुभूति से अभिव्यक्ति दी है उससे नारी के प्रति समाज का दृष्टिकोण बदल गया है।

उषा प्रियंवदा महिला रचनाकारों में अपना अद्वितीय स्थान बना चुकी हैं।

उपन्यास में व्यक्ति, परिवार, स्त्री–पुरूष संबंध आदि का सहजता से चित्रण देखने मिलता है। उपन्यास की नायिका सुषमा रूढीवादी नारी है; वह त्यागमयी भारतीय नारी के रूप में चित्रित है। आधुनिक युग की भारतीय नारी को समाज की नित नई परिस्थितियों से जाने अनजाने अंदर ही अंदर घुटना पडता है। नारी की अन्तर्मन की व्यथा का अत्यंत सूक्ष्म और मार्मिक चित्रण उपन्यासकार उषा प्रियवंदा जीने अंकित किया है। सुषमा अपने परिवार का पालन–पोषण करने के लिए समय से पहले प्रौढ बन गयी है। अपनी कोमल संवेदनाएँ, भविष्य के सुंदर सपने, अपनी इच्छाएँ इन सभी का गला घोंट देती है। सुषमा नोकरी करती है, उसके वेतन से ही घर चलता है; इसलिए माता–पिता भी उसके विवाह की बात को कोई–न–कोई कारण या खोट निकालकर टाल देते हैं।

सुषमा उसके पडोसी नारायण को दिल दे बैठती है, परंतु समय आने पर परिस्थितियों का सामना न कर पाने के कारण विवाह की कल्पना सुषमा के लिए एक सपना बनकर रह गयी।

उसके जीवन में निल के आने से उसका बिखरा जीवन फिर से खिल उठता है, उसमें चेतना का संचार होने लगता है किंतु फिर एक बार अपने अधुरेपन को पूरा नहीं कर पाती। सुषमा के जीवन के सुनेपन में कुछ समय के लिए नील हरियाली अवश्य लेकर आता है। नील से मिलने के बाद सुषमा के रेगिस्तान से तपते जीवन में शीतलता जरूर आती है, किंतु यह शीतलता अधिक दिनों तक टिक नहीं पाती क्योंकि समाज ने, उसके अपने लोगों ने उसे अपनी जिम्मेदारियों का एहसास कराया है। यही कारण है कि अपनी अनमोल यादों को दिल में समेटकर नील से दूर जाने का निर्णय लेना पडता है।

उपन्यास की नायिका सुषमा अजनबीपन के कारण अपनी दारूण अवस्था को बदलने में कामयाब नहीं हो पाती है। अपने जीवन में आयी हुई उलझनों को सुलझाने में वह असमर्थ बनती है। छात्रावास के पचपन खम्भे और उसकी लाल दिवारें उन परिस्थितियों के परिचायक हैं, जिनमें रहकर सुषमा को उब और घुटन का तीखा एहसास होता है। वह उससे मुक्त नहीं हो पाती या होना नहीं चाहती।

'पचपन खम्भे लाल दिवारें'– नारी समस्या

हिन्दी के अनेक रचनाकारोंने नारी की समस्याओं को ध्यान में रखकर अपनी रचनाओं में इन समस्याओं को पाठको के सामने लाने का भरसक प्रयास किया है। उषा प्रियंवदाजीने आधुनिक युग की सुशिक्षित नारी और

उसकी समस्याओं को उपन्यास में अंकित किया है। इस आधुनिक और शिक्षित नारी के जीवन में अनेवाली रिक्तता और उसके अपने अस्तित्व की पहचान बनाने के लिए संघर्षशील नारी का चित्रण किया है, उससे हर पाठक को नारी–जीवन तथा उसकी समस्याओं के प्रति सोचने के लिए बाध्य करता है।

जीवन के बदलते दृष्टिकोण के साथ पारिवारिक संबंधो में भी बदलाव दिखाई देते हैं। जीवन मुल्यों के साथ रिश्तों में आ रहे बदलाव को नजर अंदाज नहीं किया जा सकता। सामाजिक समस्या के साथ–साथ पारिवारीक समस्याएँ भी आज की आधुनिक नारी के सामने बाँह पसारे खडी है। 'पचपन खम्भे लाल दिवारें' उपन्यास की नायिका सुषमा सुशिक्षित और बुध्दिजीवी नारी है। सुषमा अपने परिवार के लिए अर्थोपार्जन की साधन मात्र बनकर रह जाती है। सुषमा के माता–पिता उसें जीवन में दुःखदायी स्थिती उत्पन्न करने के लिए उत्तरदायी हैं। भाई–बहनो की इच्छापूर्ति की वह साधन–मात्र है। नारी को पारिवारीक जिम्मेदारी संभालते–संभालते कभी–कभी अपने अस्तित्व, अपनी भावनाओं को त्यागना पड़ता है। पारिवारिक समस्याओं के कारण ही सुषमा की जिन्दगी बिखर जाती है। सुषमा पर पुरे परिवार की जिम्मेदारी है। इस जिम्मेदारी के कारण वह अपने आपके बारे में कभी सोच ही नही सकतीं–सुषमा परिवार के कारण भरण–पोषण के लिए नोकरी करती है। उसके माता–पिता उसके विवाह की नहीं सोचते, इसके विपरित छोटी–बेटी नीरू के विवाह की जिम्मेदारी भी सुषमा पर ही डाल दी जाती है। नील के सामने अपनी पारिवारीक समस्या को स्पष्ट करते हुए सुषमा कहती है– ''पहली बात तो नील यह है कि मेरी बहुत जिम्मेदारियाँ हैं। तुमसे तो कूछ छिपा नहीं है। पक्षाघात से पीडित बापू, दो बहनें और भाई, सब मुझे ही करना है।'' परिवार की आर्थिक कमजोरी सुषमा का जीवन तहस–नहस कर देती है। अपने परिवार के लिए वह सब कुछ करती है, फिर भी वह अपने ही परिवार में उपेक्षित रह जाती है।

'पचपन खम्भे लाल दिवारें' उपन्यास की नायिका सुषमा परिवार का दायित्व उठाते–उठाते इतनी अकेली हो गयी है कि उसे कुछ भी अपना नहीं लगता। अकेलेपन की स्थिती को उपन्यासकार इस प्रकार व्यक्त करती है– '' अपने परिवार का सारा बोझ अपने उपर लिए सुषमा काँपने लगती। तब वह चाह उठती कि दो बाँहे उसे भी सहारा देने को है, एक नीरवता में कुछ अस्फुट शब्द उसे भी सम्बोधन करें।'' सुषमा अपने अकेलेपन के कारण बेबसी में अपनी सहेली से कहती है–''आज से सोलह साल बाद शायद तुम अपनी बेटी को लेकर इस कॉलेज में आओ तब भी तुम मुझे यहीं पाओगी। कॉलेज के पचपन खम्भों की तरही स्थिर, अचल।'' इसी उपन्यास की एक और पात्र मिस शास्त्री भी इसी समस्या का शिकार हैं। अकेलेपन की त्रासदी के कारण व्यक्ति कभी–कभी विक्षिप्त बन जाता है, इसका ज्वलंत उदाहरण मिस शास्त्री हैं।

सुषमा अकेलेपन के कारण अविवाहित है फिर भी वह नील से संबंध स्थापित करती है। जीवन की नीरवता ने उसका जीना दुश्वार कर दिया है। शिक्षित नारियाँ अपने जीवन में आनेवाली मानसिक यन्त्रणा को विवशतापूर्वक झेल रही है।

छात्रावास के पचपन खम्भे और लाल दिवारें उन परिस्थितियों के प्रतिक है जहाँ सुषमा को उब, घुटन का तीखा अनुभव होता है। वह परिवार से दूर रहकर नोकरी करती है। भौतिक सुविधाओं से वह बहुत सुखी है लेकिन स्वयं कुँवारी रह जाने की कडवाहट को वह भूल नहीं पाती। अपनी आशाओं एवं आकांक्षाओं की आपूर्ति से उत्पन्न मानसिक द्वंद्व के कारण उसकी अवस्था करुणा से तरबतर हो जाती है। उसे लगता है– ''मै। केवल साधन हूँ। मेरी भावना का कोई स्थान नहीं। मैंने अपने को ऐसी जिंदगी के लिए ढाल लिया है, तुम चले जाओगे तो मैं फिर अपने को उन्हीं प्राचीरों में बंदी कर लूँगी।'' सुषमा को नील का साथ पसन्द तो है फिर भी वह उसे अस्वीकार कर देना पडता है। मजबूर सुषमा को समाज एवं परिवार के कारण अपनी जिम्मेदारीयों के कारण अपने प्रेम का त्याग करना पडता है। नील के जाने के बाद वह टूट जाती है। वह अकेली रह जाती है और इस अकेलेपन को वह स्वीकार कर लेती है।

'पचपन खम्भे लाल दिवारें' उपन्यास की कथा रोमांटिक प्रेम की कथा है, जिसमें अवसाद की गहरी छाया के साथ मधुरता और विफलता का मीठा दंश शामिल है। सामाजिक स्थिती में बदलाव के साथ प्रेम और विवाह के संबंध में भी काफी बदलाव आए हैं परंतु नारी स्वतंत्र विचार रखते हुए भी अपनी जिंदगी को अपने तरीके से जी नहीं सकती। जेष्ठ पुत्री होने के कारण परिवार की पूरी जिम्मेदारी अपने कंधे पर उठा लेती है। उसके अन्तर्मन में अपना घर बसाने की इच्छा है परंतु उसकी यह इच्छा पुरी नहीं हो पाती। युवावस्था में सुषमा पडोसी नारायण के प्रति आकर्षित होती है, उसके साथ विवाह के सपने देखती है पंरतु नारायण की शादी दूसरी लडकी से होती है। आज वह अपने अतित को याद करती है तो दुःख के बोझ से काँपने लगती है। आज स

ुषमा की आयु तैंतीस साल है। उसकी यह उम्र न तो विवाह के योग्य है न ही प्रेम करने योग्य । उसके जीवन में अचानक नील आता है, जो उससे पाँच साल छोटा है। नील के आने से सुषमा को जीने की नई

उम्मीद मिलती है लेकिन सुषमा के जीवन में फिर नया मोड आता है, जहाँ वह कर्तव्य और प्रेम इन दो पाटों के बीच फँसकर रह जाती है। उसे नील से हमेशा के लिए दूर होना पडता है। नील के आग्रह पर भी वह विवाह से इन्कार कर देती है। सुषमा अपने प्रेम को चाहकर भी प्राप्त नहीं कर सकती।

सुषमा, नील से पाँच साल बडी है इसलिए मीनाक्षी के पूछने पर भी वह नील से शादी क्यों नहीं कर सकती? तब सुषमा कहती है– ''प्रेमिका और पत्नी में बहुत फर्क होता है। फिर मैं नही चाहुँगी कि नील के मन में कभी भी यह विचार आये कि उससे गलती हुई है।'' उम्र के कारण पति–पत्नी में मनमुटाव होकर बाद में उनके संबंधों में दरार पड सकती है।

उपन्यास की नायिका सुषमा पारिवारिक जिम्मेदारियों के कारण अविवाहित रहती है। पक्षाघात से पीडित पिता के उत्तदायित्व से वह चाहकर भी मुक्त नहीं हो पाती। विवाह योग्य उम्र होने पर भी पिता उसके विवाह की बात नहीं करते। माँ को छोटी बेटी नीरू के विवाह की चिंता है। यौवनावस्था में उठनेवाली तरंगे सुषमा के मन को उद्वेलित कर देती है। नारायण का दूसरी लडकी से विवाह होना उसकी जिंदगी में दूरी उत्पन्न कर देता है। नील का जिंदगी में आना, जीने की आशा को पल्लवित करता है लेकिन वह नील से भी विवाह नहीं कर पाती।

उपन्यास की नायिका सुषमा पारिवारिक जिम्मेदारियों का वहन करते हुए अपने आपको भूल गयी है। असका जीवन एक रेगिस्तान बन गया है। उसके जीवन में नील का प्रवेश होता है। सुषमा सामाजिक डर और आर्थिक अभाव के कारण अपने प्रेम को सफल नहीं बना पाती। उपन्यास की दूसरी पात्र स्वाती प्रेम में सफल न होने के कारण आत्महत्या करने की कोशिश करती है।

भारतीय परिवेश में नारी सदियों से शोषित है। अपने अधिकारों से वंचित नारी के हिस्से हमेशा कर्तव्य ही आये हैं– माँ के रूप में, बेटी के रूप में तो कभी पत्नी के रूप में। उपन्यास की नायिका सुषमा नोकरी करती है, घर की जिम्मेदारी भी उठाती है; परिवार का आर्थिक बोझ उसी पर आ जाता है। सुषमा इतनी मजबूर हो जाती है कि चाहते हुए भी अपनी इच्छा के अनुसार जिंदगी जी नहीं पाती। नील उसके सामने विवाह का प्रस्ताव रखता है, तो वह जवाब देती है– ''यह कॉलेज, ये खम्भे, मेरी डेस्टिनी हैं, मुझे यहीं छोड दो।'' इस प्रकार सुषमा बेटी का फर्ज अदा तो करती है परंतु अपने जीवन को अंधकार में ढकेल देती है। परिस्थितीयों से लडने की बजाय हथियार डाल हार मान लेती हैं।

उपन्यास की नायिका सुषमा सामाजिक समस्या के कारण नील को चाहते हुए भी विवाह नहीं कर पाती। नौकरी के क्षेत्र मे उसपर अनेक लाँछन लगाये जाते हैं; उसे वार्डन के पद से हटाने की भी पूरजोर साजिश की जाती है।

उपन्यास की नायिका सुषमा आर्थिक समस्या की शिकार है। सुषमा पर परिवार की जिम्मेदारी है इसी कारण उसके विवाह की कोई बात नहीं सोचता ना ही करता है। वह परिवार के लिए अपने व्यक्तित्व, अस्तित्व और कोमल भावनाओं को समेट लेती है। वह परिवार के लिए अपने प्रेम की बलि तक चढा देती है। परिवार की आर्थिक स्थिती बिगड जायेगी इसलिए अपनी इच्छाओ का गला घोट देती है।

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं– उषा प्रियंवदा के उपन्यास 'पचपन खम्भे लाल दीवारे' उपन्यास में भारतीय नारी और उसकी समस्याओं को एक पर्याप्त प्लेटफार्म मिला है। उषा प्रियंवदा जी ने नारी के जीवन की समस्याओं को बडी लगन से आत्मसात किया है इसी के साथ बडे ही सुगमता से नारी की समस्याओं को चित्रित किया है। नारी की समस्याओं को 'पचपन खम्भे लाल दीवारें' उपन्यास में बडी सजीवता, सहजता और मार्मिकता के साथ उजागर किया है। उपन्यास के नारी पात्र अपनी अपनी अनेक समस्याओं का सामना करते हुए अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए सजग हैं। कहीं नारियाँ हारती है तो कही पर विद्रोह करती हुई जीत जाती है।

संदर्भ ग्रंथ –

- आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास – डॉ. सुर्यनारायण रणसुभे
- उपन्यास का स्वरुप – डॉ. शशि भूषण सिंहल
- पचपन खम्भे लाल दिवारें – उषा प्रियंवदा